499 वाँ सफलतम अंक

प्रतियोगिता दर्पण
हिन्दी मासिक

वर्ष 42
अष्टम अंक
मार्च 2020

इस अंक में...

10 सम्पादकीय
11 राष्ट्रीय घटनाक्रम
17 अन्तर्राष्ट्रीय घटनाक्रम
23 ब्रिटेन अब यूरोपीय संघ का सदस्य नहीं रहा : ब्रेक्जिट सम्पन्न
24 आर्थिक-वाणिज्यिक परिदृश्य
35 नवीनतम सामान्य ज्ञान
44 राज्य समाचार
45 खेलकूद
49 रोजगार समाचार
51 आस्ट्रेलिया के जंगलों में आग : दुनिया के लिए बड़ी चेतावनी
53 युवा प्रतिभाएं

फोकस

60 (1) वित्तीय समावेशन हेतु राष्ट्रीय रणनीति, 2019-2024
64 (2) सु-शासन सूचकांक 2019 में भारत के राज्य और केन्द्रशासित क्षेत्र
67 (3) भारतीय अर्थव्यवस्था में सुस्ती का दौर : कारण और समाधान
70 विश्व परिदृश्य
75 स्मरणीय तथ्य
78 वर्तमान में चर्चित विभिन्न अवधारणाएँ
83 ऐतिहासिक स्थल एवं ऐतिहासिक व्यक्तित्व
87 संवैधानिक लेख—नागरिकता संशोधन कानून
89 अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग लेख—ग्यारहवाँ ब्रिक्स शिखर सम्मेलन और भारत
91 सामाजिक लेख—सार्वजनिक सेवाओं में भ्रष्टाचार-समस्या और निदान
93 विधायी लेख—राजनीति के अपराधीकरण को लेकर सर्वोच्च न्यायालय के फैसले की समीक्षा
96 पर्यावरण सम्बन्धी लेख—पर्यावरण संरक्षण में विशेषज्ञता: ग्रीन जॉब्स
98 स्वास्थ्य लेख—बीमारियाँ परोसते लेडयुक्त खाद्य पदार्थ
100 कृषि लेख—घटता मृदा उपजाऊपन : कारण और निवारण
102 विभाज्यता का तीव्रतम महासूत्र
105 विधि निर्णय
107 सार-संग्रह

वस्तुनिष्ठ सामान्य अध्ययन

111 (i) आगामी संघ एवं राज्य लोक सेवा आयोग (प्रा.) परीक्षा हेतु विशेष हल प्रश्न
121 (ii) उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (प्रा.) परीक्षा, 2019
127 (iii) मध्य प्रदेश पी.एस.सी. राज्य सेवा (प्रा.) परीक्षा, 2019
134 (iv) उत्तराखण्ड सहायक वन संरक्षक (प्रा.) परीक्षा, 2019
143 उद्योग, व्यापार एवं बैंकिंग सचेतता
145 समसामयिक वस्तुनिष्ठ प्रश्न
148 जनजातीय कार्य मंत्रालय की उपलब्धियाँ
151 तर्कशक्ति—ओरिएंटल इंश्योरेंस कम्पनी ए.ओ. (प्रा.) परीक्षा, 2017
155 क्या आप जानते हैं ?
156 अपना ज्ञान बढ़ाइए
157 प्रथम पुरस्कृत समीक्षा—भारतीय अर्थव्यवस्था वर्तमान में गहरे आर्थिक संकट से गुजर रही है
160 प्रथम पुरस्कृत निबन्ध—आपकी कल्पनाशक्ति भावी जीवन के आकर्षणों का पूर्वावलोकन
162 निबन्ध प्रतियोगिता क्रमांक— 488 का परिणाम

प्रतियोगिता दर्पण में प्रकाशित किसी भी सामग्री अथवा चित्र के लिए सम्पादक की सहमति होना आवश्यक नहीं है. –सम्पादक

• E-mail : publisher@pdgroup.in • Website : www.pdgroup.in

सम्पादकीय

गांडीवधारी अर्जुन बनिए

सदियों पूर्व महाभारत का कालखण्ड वर्तमान से पूरी तरह जुड़ा हुआ है. राज-नेताओं की स्तुति में लगे हुए बुद्धिजीवी सत्ता राजकृपा के अभिलाषी हैं. लेखक, कवि, विद्वान् आदि समाज में आए दिन होने वाली घटनाओं के दमन, बलात्कार, अपहरण, छल, कपट, घोटालों आदि को टुकुर-टुकुर देखते रहते हैं. सरल-मन, साधु-स्वभाव ज्ञानीजन की मनःस्थिति बहुत कुछ अवश है—भीष्म और द्रोण की तरह. यही तो महाभारत के कालखण्ड और वर्तमान की समानता है.

महाभारत का कालखण्ड बहुत कुछ वर्तमान जैसी घटनाओं और ऐसे ही चरित्रों से भरा पड़ा है. दुर्भाग्य यह है कि हमने ऐसे शाश्वत ग्रन्थ को पूजा और चर्चा की वस्तु बनाकर छोड़ दिया है और कुछ भी सीखने का प्रयास नहीं किया है. यदि ऐसा किया होता, तो हम भारतवासी, विशेषकर हिन्दू, वर्तमान के नारकीय जीवन की रचना न होने देते, पर ऐसा नहीं हो सका.

आज स्थिति यह है कि मूल्यों के अव-मूल्यन एवं विशृंखलन की स्थिति वही है, जो उस कालखण्ड में थी. व्यासकृत महाभारत के सभी सत्य वर्तमान में हमें भोगने पड़ रहे हैं. अवश मानसिकता वाले भीष्म और द्रोण की ओर संकेत हम कर चुके हैं. हमारे बीच कर्ण भी हैं, जो समाज में अपने वांछित अधिकार पाने के लिए छटपटा रहे हैं और वह व्यवस्था भी है जो कर्ण जैसे योग्य एवं क्षमता-सम्पन्न व्यक्तियों को कुंठाग्रस्त करके उसे नाश का मोहरा बना सकती है. महा-अभिमानी एवं शक्ति मदांध दुर्योधनों के दर्शन पग-पग पर होते हैं—आदि. अन्तर केवल इतना है—तब कृष्ण मौजूद थे और अब कृष्ण की आवश्यकता अनुभव की जा रही है और उन्हें ''यदा यदा हि धर्मस्य'' वाले उनके संकल्प की याद दिला रहे हैं. तब अर्जुन मौजूद थे, जिनके गांडीव की टंकार अधर्म के नाश का संदेश सुनाती थी. हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारे मध्य एक नहीं, अनेक अर्जुन मौजूद होंगे. हमें उनकी आवश्यकता है, आशा है द्रोपदी स्वयंवर में लक्ष्य भेद की चुनौती की भनक पड़ने पर प्रकट होने वाले अर्जुन की भाँति वे स्वयं प्रकट होंगे और विनाशोन्मुखी समाज की एवं क्षरण-ग्रसित मनोवृत्तियों की रक्षा करेंगे.

वर्तमान के मनुष्य में वह मानव विद्यमान है जो हर कालखण्ड में लिप्सा, घृणा, स्वार्थ, संवेदना, ममता, क्रोध, षड्यंत्र, लोभ आदि में निमग्न रहा है, जो मनुष्य की मूल वृत्तियाँ हैं और जिनसे उसके विलग होने की सम्भावनाएं प्रायः नहीं के बराबर हैं. दुर्भाग्य यह है कि मूल्यों की अवहेलना उन्हीं के हाथों हो रही है जिनके पूर्वजों ने कुछ पीढ़ियों पूर्व उनकी व्यवस्था दी थी. अधिक दूर क्यों जाएं, आज से 60-70 वर्ष पूर्व ही हमारे देश में एक नहीं अनेक अर्जुन थे जो मूल्यों की रक्षा करने तथा पुनर्स्थापना के लिए तन, मन धन से कटिबद्ध थे और उनमें से अनेक ने इस प्रयत्न में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया था. स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त न मालूम कौनसी हवा चली जिसने लोगों की मानसिकता एकदम बदल दी? जिस गुलामी से मुक्ति पाने के लिए हम युगों से संघर्ष कर रहे थे, वही गुलामी हमें पलक झपकते प्रिय लगने लगी, यद्यपि उसका परिधान राजनीतिक के स्थान पर आर्थिक हो गया. आर्थिक गुलामी की रक्षा के लिए हमने सांस्कृतिक गुलामी भी स्वीकार कर ली है और इस गुलामी पर हम गर्व का अनुभव भी करने लगे हैं. इस गुलामी को दूर करने वाले की आवश्यकता तो बाद में पड़ेगी. पहले हमें ऐसे कृष्ण की आवश्यकता है जो हमें इस गुलामी के अभिशप्त पक्ष से अवगत कराए. तद्नुसारिणी क्रिया रूप अर्जुनों का अभाव नहीं रहेगा, ऐसा विश्वास हम अपने युवावर्ग के प्रति व्यक्त कर सकते हैं.

●●●